5

हमें कहानियाँ अच्छी क्यों लगती हैं?

अक्षय कुमार दीक्षित*

अच्छी कहानी की विशेषताएँ क्या होती हैं? इस प्रश्न का उत्तर खोजने के लिए हमें अपनी किसी प्रिय कहानी को याद करना चाहिए और विचारना चाहिए कि उसकी कौन-कौन सी बातों के कारण वह कहानी हमें इतनी प्रिय है। इस सोच-विचार से कुछ बातें तो झट से स्पष्ट हो जाएँगी, परंतु कुछ बातों की पहचान करने में यह लेख आपकी मदद करेगा।

"कहानी किसी एक की नहीं, वह कहने वालों की है, सुनने वालों की भी। इसकी, उसकी, सबकी, सृष्टि के समूचे परिवार की। नानी की मुहर इस पर है। इस लोक की प्रजा होने के कारण हर किसी की कहानी लिखी और सुनी जा सकती है।"

(*कृष्णा सोबती, हिंदी कथाकार*)

कहानियों का इतिहास उतना ही पुराना है, जितना स्वयं मानव का इतिहास है। कहानियाँ इतने विविध रूप में हमारे चारों ओर बिखरी हुई हैं कि कई बार हम उन्हें पहचान भी नहीं पाते। हर व्यक्ति किसी न किसी तरीके से कहानी सुनता और सुनाता है। जब आप किसी को अपनी आपबीती सुनाते हैं, रात में देखे किसी सपने के बारे में बताते हैं, अपनी पड़ोसन से हुई बातचीत सुनाते हैं, अपने बॉस को देर से आने का कारण बताते हैं या अपने दोस्त को कोई घटना सुनाते हैं, तो आप दरअसल कहानी ही सुना रहे होते हैं। सिनेमा, नाटक, टी.वी. धारावाहिक हो या गाने, किसी न किसी रूप में वे कहानी से ही जुड़े हैं, या हम कह सकते हैं कि वे भी कहानी का विस्तार ही हैं। इसके बाद भी कौन कह सकता है कि उसे कहानियाँ पसंद नहीं हैं। इसीलिए इस लेख के शीर्षक में भी 'हम' शब्द का इस्तेमाल किया गया है, 'बच्चा' शब्द का नहीं।

कहानियाँ हमेशा से छोटे-बड़े, हर उम्र के व्यक्तियों को लुभाती रही हैं। आखिर क्या कारण है कि विश्व का प्रत्येक मानव कहानियों की ओर खिंचा चला आता है। क्या इसका कारण यह है कि कहानियों से हमें सीख मिलती है? हममें से शायद ही कोई व्यक्ति 'सीख' प्राप्त करने के लिए कहानियाँ सुनता होगा। सीख देने के लिए उत्सुक कोई व्यक्ति सीख देने के लिए कहानी सुनाने का रास्ता पकड़ ले, तो यह अलग बात है।

* अध्यापक, निगम सहशिक्षा विद्यालय, राजपुर, नयी दिल्ली-68

ऊपर पूछे गए प्रश्न का एक सीधा-सादा उत्तर है। विश्व का प्रत्येक मानव कहानियों की ओर इसलिए खिंचा चला आता है, क्योंकि उसे कहानियाँ अच्छी लगती हैं। अब हम इस लेख के शीर्षक पर लौटते हैं। हमें कहानियाँ अच्छी क्यों लगती है?

कहानियाँ मानव स्वभाव और उसकी प्रकृति का हिस्सा होती हैं। कहानियाँ सुनते-सुनाते हुए व्यक्ति अपने स्वाभाविक व्यवहार या ज़रूरत की ही पूर्ति करता है।

'कहानियाँ', सुनने और सुनाने वाले, दोनों की ही कल्पना को विस्तार देती है। जब कोई व्यक्ति कहानी सुनाता है, तो वह उसमें अपनी कल्पना के रंग भर देता है। कहानी के पात्र जो कुछ महसूस करते हैं, जो कोई काम करते हैं, जो कुछ कहते हैं, वह सब कथावाचक के मस्तिष्क की कल्पना के पंखों पर सवार होकर ही करते हैं, परंतु इसका अर्थ यह कतई नहीं है कि सुनने वाला व्यक्ति निष्क्रिय श्रोता भर है। वास्तव में कहानी सुनते समय भी वह उसमें अपनी कल्पना के रंग भर रहा होता है। "एक गरीब-सी लड़की जा रही थी..." सुनाते समय जो छवि कथावाचक ने अपने मन में बनाई थी, लगभग वैसी ही छवि कहानी सुनने वाला व्यक्ति भी अपने मन में बनाता है। इसका अर्थ यह हुआ कि कहानी कहने वाला और सुनने वाला, दोनों एक समान धरातल पर सहयात्री होते हैं।

कथावाचक केवल कल्पना के पंखों पर सवार होकर कहानी कह ले, यह बात भी शत-प्रतिशत सच नहीं है। वस्तुतः कथावाचक जो कुछ कहता है, उसमें उसके अपने अनुभवों का निचोड़ और छाप तो रहती ही है। तभी तो कहानी विश्वसनीय बन पाती है।

"चूहे ने कहा- मुझे तो ज़ोरों की भूख लगी है। इस समय मुझे बिल्ली भी मिल जाए, तो उसे भी खा जाऊँ!" जब कथावाचक यह वाक्य कहता है, तो सुनने वाला व्यक्ति चूहे की इस अभिव्यक्ति से पूरी तरह सहमत होता है, क्योंकि वह जानता है कि बहुत ज़ोरों की भूख लगने पर हर व्यक्ति की यही भावना होती है। अतः भले ही यह बात चूहे ने कही है, परंतु वह विश्वसनीय बन जाती है। दूसरी ओर कथावाचक यह बात इसीलिए कह सका, क्योंकि वह स्वयं भी जानता है कि बहुत भूखे होने पर कैसा अनुभव होता है।

इसी उदाहरण के आधार पर कहा जा सकता है, कि कहानियाँ हमारी दुनिया को विस्तार देती हैं। जो कुछ हम अनुभव करते हैं, वैसा ही अनुभव प्रत्येक प्राणी करता होगा, वह भी सोचता-समझता होगा, इस विश्वास का जन्म कहानियों के माध्यम से हो जाता है। साथ ही हम इन्हीं भावनाओं का आरोपण निर्जीव चीज़ों पर भी करने लगते हैं।

जिन व्यक्तियों से हम कभी नहीं मिले, जिन भावनाओं को हमने अब तक ठीक से नहीं समझा, जिन स्थानों पर हम अब तक नहीं गए, जिन परिस्थितियों में हम अब तक नहीं फँसे, कहानियों के माध्यम से हम उन सबका साक्षात्कार कर लेते हैं। अतः 'कहानियाँ', हमारी उलझी हुई दुनिया को व्यवस्थित भी करती हैं और उसे समझने में मदद भी करती हैं।

कहानियों के माध्यम से ही हम 'बेजान' शब्दों में जान डाल पाते हैं। उदाहरण के लिए–

"सियार पिलपिली हँसी हँसते हुए बोला– आज तो दावत हो गई।"

'पिलपिली', शब्द हमारे लिए नया है, परंतु सियार की पिलपिली हँसी कैसी होती होगी, हमें पता है, क्योंकि हम सियार के चरित्र से भली–भाँति वाकिफ़ हैं। अत: जब हम किसी कहानी में साहूकार को 'पिलपिली हँसी' हँसते हुए पाएँगे, तो समझ जाएँगे कि वह व्यक्ति कैसी हँसी हँस रहा होगा। साथ ही हम यह भी समझ जाएँगे कि वह साहूकार भी सियार की तरह ही धूर्त और मतलबी होगा। इस तरह 'पिलपिली' जैसा अटपटा शब्द भी अर्थ ग्रहण कर लेता है।

दूसरी ओर 'खूँखार' शब्द भले ही किसी आदमी के लिए इस्तेमाल किया गया हो, पेड़ के लिए या हवा के लिए, हम तुरंत उस प्राणी या वस्तु की भावी योजनाओं या क्रियाकलापों का अंदाज़ा लगा लेते हैं, क्योंकि हम सबने 'खूँखार शेर' की बहुत–सी कहानियाँ सुन रखी हैं। इस प्रकार कहानियाँ अर्थ निर्माण में भी हमारी मदद करती हैं।

कहानियाँ कहते और सुनते समय कथावाचक और श्रोता में एक अटूट संबंध स्थापित हो जाता है। माहिर कथावाचक उस समय श्रोता को पूरी तरह अपने सम्मोहन में बाँध लेता है। उस समय श्रोता के सामने और कोई उपाय नहीं होता है, सिवाय इस बात के कि वह पूरी कथा को कथावाचक की दृष्टि से देखे। यद्यपि शारीरिक रूप से वह वहीं होता है, परंतु मानसिक रूप से वह उस दुनिया में पहुँच चुका होता है, जहाँ की कहानी वह सुन रहा होता है। उसकी आँखों के सामने चलचित्र की तरह वह कहानी चल रही होती है। कहानी केवल कथावाचक और श्रोता का ही संबंध स्थापित नहीं करती है, बल्कि वह उन दोनों का उनके परिवेश और पूरे विश्व से संबंध स्थापित करती है। कहानियाँ व्यक्ति को मानव मात्र के प्रति संवेदनशील बनाती हैं, इतिहास पर गर्व करने के अवसर देती हैं, भविष्य की योजनाएँ बनाने की प्रेरणा देती हैं। इस प्रकार कहानियाँ हमारे वर्तमान को हमारे भविष्य और भूत से जोड़ने का काम करती हैं।

कहानियों की घटना प्रधानता भी हमें आकर्षित करती है। कहानी में जिस तेज़ी से घटनाएँ घटती हैं, उसके साथ तालमेल बिठाने के अलावा श्रोता कुछ और सोच ही नहीं पाता। कहानी में आगे क्या होगा, इसकी उत्सुकता उसे बाँधे रखती है और श्रोता कहानी की पकड़ में आ जाता है।

कहानियों के अच्छे लगने का एक कारण यह भी है कि वे किसी समस्या को सुलझाने का मार्ग सुझाती हैं। प्रत्येक कहानी का आरंभ किसी समस्या की स्थापना से होता है और उसकी समाप्ति संतोषजनक हल से होती है। यह समाधान श्रोता को भी प्रसन्नता का अनुभव करवाता है, क्योंकि स्वयं उसे भी रोज़ किसी न किसी समस्या का समाधान निकालना होता है। इस प्रकार श्रोता कहानी में स्वयं को देख पाता है या स्वयं को ढूँढ पाता है। वह जो कुछ सोचता है या अनुभव करता है, उसका वर्णन

जब कहानी में पाता है, तो उसे वह कहानी अपनी-सी लगने लगती है। उसके अपने अनुभवों की अभिव्यक्ति जब कहानी के पात्रों के माध्यम से होती है, तो वह कहानी से भावनात्मक रूप से जुड़ जाता है।

उदाहरण के लिए 'दर्ज़ी और हाथी' कहानी को ही देखें।

दर्ज़ी और हाथी –

एक दर्ज़ी की दुकान के सामने से एक हाथी रोज़ गुज़रता था। एक बार दर्ज़ी ने हाथी को एक केला खाने के लिए दे दिया। हाथी ने सूँड उठाकर उसे धन्यवाद दिया। अब तो हाथी रोज़ उसके सामने आकर रुक जाता। दर्ज़ी उसे केला देता, वह धन्यवाद कहता! एक दिन दर्ज़ी कहीं गया हुआ था। दुकान पर उसका छोटा-सा बेटा बैठा हुआ था। जब हाथी ने आकर अपनी सूँड बढ़ाई, तो बेटे ने उसकी सूँड में सुई चुभा दी। हाथी चुपचाप चला गया। कुछ देर बाद वह सूँड में पानी भरकर लौटा और उस लड़के को पानी से नहला दिया।

इस कहानी में हमारे रोज़मर्रा के अनुभवों और विचारों की ही अभिव्यक्ति है। हम जानते हैं, कि जब किसी प्राणी को (भले ही वह हाथी हो या मनुष्य) एक बार कोई अच्छी चीज़ कहीं से मिले, तो उसे वहीं से वह चीज़ बार-बार मिलने की आशा बँध जाती है, चाहे वह प्रशंसा का वाक्य हो या खाने-पीने की कोई चीज़। इसी कारण हम जानते हैं कि एक बार केला मिलने के बाद हाथी रोज़ उसकी आशा में दुकान पर अवश्य लौटेगा। छोटे लड़के का सुई चुभा देना भी लड़कपन की एक आम हरकत का प्रतीक है। ऐसी ही कोई न कोई शरारत प्रत्येक बच्चा किसी न किसी के साथ करता ही है, बस अवसर मिलने की देर है। और बच्चे ही क्यों, शरारत करने की इच्छा तो प्रत्येक व्यक्ति के मन के किसी न किसी कोने में छुपी होती है, भले ही अपनी उम्र, वातावरण या सामाजिक दर्ज़े के कारण वह उसे कर न पाए। ऐसे ही अनेक कार्य होते हैं, जो हम करना तो चाहते हैं, परंतु कर नहीं पाते। जैसे– जादुई सफ़र, शेर से लड़ाई आदि। कहानियों के माध्यम से हम अपनी इन इच्छाओं की पूर्ति भी कर लेते हैं।

हाथी का बदला भी हमारी ही आकांक्षाओं का प्रकटीकरण है, क्योंकि हम सब चाहते हैं, कि यदि किसी ने कोई गलत कार्य किया है, तो उसका परिणाम उसे अवश्य भुगतना चाहिए। अब प्रश्न यह उठता है कि पानी से गीला हो जाना 'सज़ा' की श्रेणी में रखा जाना चाहिए या नहीं? जो लोग बचपन में नहाने से जी चुराते थे, वे इस बात से ज़रूर सहमत होंगे कि पानी से गीला हो जाना, उस बच्चे के लिए किसी सज़ा से कम नहीं था।

कहानियों में स्थापित किसी समस्या को सुलझाने के लिए जब कोई पात्र (जैसे–हाथी) अपनी चतुराई, आत्मविश्वास, वीरता, सूझबूझ का परिचय देता है, तो सुनने वालों को वे कार्य भी अपने से लगने लगते हैं। इसका कारण भी वही जुड़ाव है, जिसकी चर्चा पहले भी की जा चुकी है। इससे श्रोता 'कहानी', की घटनाओं और पात्रों से प्यार करने लगते हैं। कहानी से इसी जुड़ाव के कारण वे बुरे पात्रों से घृणा भी करने लगते हैं। घटनाओं या किसी पात्र की हरकतों के कारण वे कभी हँस पड़ते हैं, तो कभी तनाव या गुस्से से भर उठते हैं। इस प्रकार कहानियाँ हमें अपनी भावनाओं को प्रकट करने के अवसर देती हैं।

हम सभी रोज़ किसी न किसी परीक्षा से गुज़रते हैं। सर्दी में रज़ाई से निकलना हो या स्कूल व दफ़्तर समय पर पहुँचना। सब्ज़ी में नमक डालना हो या सुबह सैर के लिए जाने का वादा निभाना। हर समय, चौबीसों घंटे हमारा आकलन किया जाता है। छोटों को तो इस जाँच की कसौटी से कहीं अधिक गुज़रना पड़ता है। वे यह बात जानते हैं कि उनके प्रत्येक कार्य या कथन का 'बड़े' निरंतर अवलोकन कर रहे हैं और इसी आधार पर उन्हें अगले कार्य दिए जाएँगे या 'लेबल' दिए जाएँगे। जैसे– यह अच्छी लड़की है, या इसे तो अब तक जूते पहनना भी नहीं आता!

इस निरंतर चलने वाली परीक्षा के प्रति बच्चे पूरी तरह सचेत हैं, भले ही बड़े इस बात को जानते हों या नहीं। ऐसे में कहानियाँ ही एकमात्र ऐसी मित्र हैं, जो सुनने वालों को किसी कसौटी पर नहीं कसती। इसी कारण कहानियों से न तो किसी को डर लगता है, न ही उनसे कोई दूर भागना चाहता है।

❑❑❑